मंथन: राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०-हिंदी-और हम

केन्द्रीय विद्यालय क्र. 3

दानिश नगर, भोपाल

विद्यालय पत्रिका 2022-23

हमारे संरक्षक

श्री सोमित श्रीवास्तव, उपायुक्त
केविसं, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल

श्रीमती रानी डांगे, सहायक आयुक्त
केविसं, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल

श्रीमती किरण मिश्रा, सहायक आयुक्त
केविसं, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल

हमारे मार्गदर्शक

डॉ. ऋतु पल्लवी, प्राचार्य

श्री रितेश पटेल, उप-प्राचार्य

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अपने साथ कई नवीन और युगीन आयामों को समेटे हुए शिक्षा को वर्तमान देशकाल- परिवेश के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक तथा विद्यार्थी को 21वीं सदी का वैश्विक नागरिक बनाती है। इन सभी नए आयामों में जो सबसे अनूठे आयाम हैं -वह है विषय-चयन-शिक्षण के पक्ष में लचीलापन, व्यावहारिक शिक्षण-पद्धति एवं भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन । बहुभाषिकता एवं समावेशन भारत के लिए अनिवार्यता है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में उक्त संदर्भ के ऐसे कई बिन्दु हैं जो उत्साहित करते हैं जैसे- मातृभाषा, क्षेत्रीय एवं प्रादेशिक - अल्पसंख्यक भाषा को बढ़ावा देना, शिक्षण में द्विभाषी माध्यम तथा द्विभाषी पुस्तकों का प्रयोग, विषयों के चुनाव में लचीलापन, भाषा, साहित्य एवं अन्य विषयों का अंतर-संबंध स्थापित कर पढ़ाना, संस्कृत एवं अन्य प्राचीन भाषाओं का ज्ञान, शिक्षा का भारतीयकरण आदि ।

यह लघु ई- पत्रिका नई शिक्षा नीति-2020 के ऐसे कई अनूठे संदर्भों पर प्रकाश डालती है, आशा है पाठक इसे पसंद करेंगे। मेरी शुभकामना है कि विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का यह सदप्रयास सफल हो ।

डॉ. ऋतु पल्लवी

प्राचार्य

संदेश

प्रिय पाठकों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-3 भोपाल नई शिक्षा नीति 2020 पर एक पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है। मैं इस अवसर पर सभी छात्र छात्राओं, शिक्षकों, अभिवावकों और संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

नई शिक्षा नीति नए भारत की आवाज है जो कि शिक्षा के क्षेत्र में न केवल समानता, नवाचार और समरसता को बढ़ावा देती है बल्कि छात्रों को सक्रिय अधिगम द्वारा अपनी क्षमताओं को विकसित करने का एवं शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण प्रणालियों और उपकरणों से अपने शिक्षण कौशलों को अद्यतन बनाये रखने का अवसर प्रदान करती है ।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका समस्त पाठकों को नई शिक्षा नीति 2020 के बारे में उनकी समझ को और बेहतर बनाने में मदद करेगी।

शुभकामनाओं सहित ।

रितेश कुमार पटेल

उप-प्राचार्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

शिक्षा नीति का आगाज हुआ,
10+2 के शैक्षणिक ढांचे के बदले,
5+3+3+4 के शैक्षणिक ढांचे का निर्माण हुआ,
शिक्षा नीति का आगाज हुआ
हम सब का भी विकास हुआ।
पहले-पहल शैक्षणिक ढांचे में शिक्षा का आना
और हम सब बच्चों का खुशी में झूम जाना,
अब बच्चे स्कूल जाने से नहीं घबराएंगे
अब स्वयं ही वह दौड़ते हुए स्कूल पहुँच जाएंगे,
ना गृह कार्य का कोई बोझ होगा
ना परीक्षा की कोई चिंता,
नई शिक्षा नीति का आगाज हुआ,
हम सब का भी विकास हुआ।
दूसरे शैक्षणिक ढांचे में प्रीपेट्री शिक्षा का आना,
उसमें भी बच्चों का मंद-मंद मुस्कुराना,
अब बच्चे दूसरी भाषा से नहीं घबराएंगे,
क्योंकि वह सब कुछ अपनी भाषा में ही समझ जाएंगे ।
नई शिक्षा नीति का आगाज हुआ,
हम सबका भी विकास हुआ |
तीसरे शैक्षणिक ढांचे में मध्यवर्ग का आना,
उसमें भी हम सब बच्चो का प्रफुल्लित हो जाना,
इस शिक्षा नीति से हम सब हुनरवान बन जाएंगे,
अपनी-अपनी क्षमता से इस देश को बदलकर दिखलाएंगे ।
अपने देश की कम से कम एक और भाषा को भी अपनाएंगे,
अपनी खोई हुई संस्कृति को भी* *पहचान दिलाएंगे ।
नई शिक्षा नीति का आगाज हुआ, हम सब का भी विकास हुआ।
चौथे शैक्षणिक ढांचे में सेकेंडरी* *स्टेज का आना,
उसमें भी हम सब बच्चों का उज्जवल भविष्य दिखाना,
अब स्ट्रीम - स्ट्रीम नहीं चिल्लाएंगे ,
अपनी पसंद के विषयों को हम सभी पढ़ पाएंगे ।
आर्ट्स, साइंस और कॉमर्स के भेदभाव से भी बच जाएंगे,
अपनी तर्कशक्ति को इतना बुलंद बनाएंगे,
की विश्व भर के लोगों को चकित कर जाएंगे।
नई शिक्षा निति का आगाज हुआ हम सब भी विकास हुआ ।

यशस्वी राठौड
कक्षा-9th 'अ '
द्वितीय पाली

हिंदी मेरा ईमान है

हिंदी मेरा ईमान है
हिंदी मेरी पहचान है।
हिंदी हूं मैं वतन भी मेरा,
प्यारा हिंदुस्तान है।

बढ़े चलो हिंदी की डगर,
हो अकेले फिर भी मगर।
मार्ग के कांटे भी देखना,
फूल बन जाएंगे पथ पर।

मातृभाषा होती है,
बड़ी प्यारी।
सदैव बनी रहे,
इससे अपनी यारी।

मातृभाषा सदैव दिल,
में बसती है।
इसलिए बढ़ती है,
इससे समझदारी ।

प्रियांश आठनेरे
कक्षा ७ वीं "ब"
द्वितीय पाली

भारत को एक वैश्विक ज्ञान शक्ति बनाने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका

"तक्षशिला नालंदा का इतिहास लौटकर आएगा,
भारत का स्वर्णिम गौरव केंद्रीय विद्यालय लाएगा"

केंद्रीय विद्यालय गीत की ये पंक्तियां सुनते ही मन में एक उत्साह-सा छा जाता है।
34 वर्षों बाद भारत में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आने से शिक्षा, शिक्षण और अधिगम में आमूलचूल परिवर्तन की को संभावना दिखाई दे रही है,उससे यह अनुभव होने लगा है, कि इस लक्ष्य को प्राप्त करना अब ज्यादा दूर नहीं है।

जिस प्रकार तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्व स्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा और शोध के ऊंचे प्रतिमान स्थापित किए थे, और विभिन्न पृष्ठभूमियों और देशों से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को लाभान्वित किया था, ज्ञान के विविध क्षेत्रों में भारत ने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की थी। आज हमारा देश इस इतिहास को दोहराने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ फिर से तैयार है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में किए गए प्रावधानों के अनुसार हमारे विद्यालय में अनुभव आधारित शिक्षण,व्यवहारिक ज्ञान, परियोजना कार्य, व्यवसायिक शिक्षा आदि पर विशेष बल देकर शिक्षण में नवाचार का प्रयोग किया जा रहा है। हिंदी शिक्षण में नाट्य प्रस्तुति, कविता को नई धुनों में गाकर विद्यार्थियों की रुचि अनुसार प्रस्तुत करना व करवाना। विद्यार्थियों को उनकी रूचि और स्तर के अनुसार परियोजना कार्य देना। साथ ही विभिन्न विषयों का कला के साथ समायोजन करना यह सभी नई पद्धतियां अपनाई जा रही हैं। जिससे विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया बोझिल नहीं लगती है। खेलखेल में सहज तरीके से विद्यार्थी विकास की और बढ़ रहे हैं।
समावेशी शिक्षा के प्रावधान के अनुसार अभी स्तरों और वर्गों के विद्यार्थी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए स्पेशल एजुकेटर की व्यवस्था विद्यालय में की गई है।बहु विषयक दृष्टिकोण और बहुविधिक आकलन का प्रयोग भी शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए किया जा रहा है।
कहा जाता है कि जब किसी देश में बड़ा बदलाव करना हो, तो उसकी शिक्षा नीति में बदलाव करना चाहिए । वर्तमान में हमारे देश की आधी से अधिक आबादी 25 वर्ष से कम उम्र की है और भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर आगे कदम बढ़ा रहा है। ऐसे में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से भारत का एक वैश्विक ज्ञान शक्ति के रूप में स्थापित होना अवश्यंभावी है।

हमारे के विद्यार्थी विविध क्षेत्रों में अपनी सफलता के परचम पूरे विश्व में लहराएंगे यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य और विजन है।

-उषा शर्मा

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिन्दी

निबंध

"मातृभाषा का महत्व "

"मातृभाषा में व्यक्त है, दुनिया का सब ज्ञान"

"भारत मां की बोली हिंदी ,करो इसका सम्मान"

हर एक देश की पहचान उसके देश की भाषा और संस्कृति से होती है। किसी भी देश की एकता में उस देश की राष्ट्रभाषा एक भूमिका निभाती है। हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिंदी है। जन्म लेने के बाद से ही मनुष्य जो प्रथम भाषा सीखता है, उसे ही मातृभाषा कहा जाता है, मातृभाषा किसी भी व्यक्ति की सामाजिक भाषाई पहचान होती है ,सभी संस्कृति और व्यवहार इसी के द्वारा हम पाते हैं।

मातृभाषा को बढ़ावा देने का उद्देश्य देश और दुनिया में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिकता को बढ़ावा देना है। विश्व में भारत की भूमिका और भी अधिक मायने रखती है क्योंकि एक बहुभाषी राष्ट्र होने के नाते मातृ भाषाओं के प्रति भारत का उत्तरदायित्व कई अधिक मायने रखती है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020 के अनुसार हमारे विद्यालय मेन भी मातृभाषा मेन ही शिक्षा पर ज़ोर दिया जाता है। इस नीति के माध्यम से हमारी आंचलिक और और प्रादेशिक भाषाओं को भी प्रोत्साहन मिलेगा ।

माँ से सीखो जो भाषा,
वही है हमारी मातृभाषा
माँ, मातृभूमि और मातृभाषा
जो करता है अनादर इसका
मनुष्य कहलाने योग्य नहीं होता
वो मूर्ख कहलाता।
राष्ट्रभाषा नहीं, ना सही,
हिंदी का तो सारा जहां है....
मातृ तो माँ होती है,
और माँ से बढ़कर क्या है....

-निधि गुप्ता

पृथ्वी का दृश्य

पृथ्वी की है यही पुकार,

पेड़ पौधे ही है प्रिय उपहार।

हमारा भी है यही संकल्प,

धरती का करेंगे काया कल्प।

नन्हें-नन्हें हाथों से सजाएँगे,

नित नए पेड़ पौधे लगायेंगे।

आओ सखी हम पेड़ लगाएँ

अपनी पृथ्वी माता को खुशियां पाहुचाएँ....

अविका दुबे (दूसरी ब)

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में -विद्यालय पुस्तकालयों की भूमिका

शैक्षणिक पुस्तकालय संस्था का हृदय कहे जाते हैं। विद्यालय में इनका वही स्थान है जो कि मानव शरीर में हृदयका अर्थात शैक्षणिक संस्थानों का अति महत्वपूर्ण भाग पुस्तकालय ही हैं। पुस्तकालयों में कई तरह की पठन सामग्रीहोती है जैसे पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार पत्र, संदर्भ ग्रंथ, मैप एवं इ;बुक्स, जनरल आदि। आज के विज्ञानएवं तकनीकी के युग में छात्रों की जरूरत और सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालयों का स्वरूप भी बदला है,नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पुस्तकालयों के विकास को बहुत महत्व दिया गया है। परंपरागत पुस्तकालयों कोआधुनिक सुविधा संपन्न बनाएं बनाने की बात नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कही गई है। नई शिक्षा नीति में पुस्तकालयों के निम्नलिखित बिंदुओं पर जोर दिया गया है।

- पुस्तकालयों का संग्रह समग्र समावेशी होना चाहिए। डिजिटल, बहुभाषी, बहु स्तरीय, द्विभाषी एवं वैश्विक ज्ञान के साथ-साथ भारतीय साहित्य पर आधारित पुस्तकें होना चाहिए।
- पुस्तकालयों में सभी भाषाओं में आधुनिक एवं परंपरागत सहायता उपलब्ध होना चाहिए।
- पठन संस्कृति के विकास हेतु पुस्तकालयों में मनोरंजक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित पुस्तकों का संग्रह होना चाहिए।
- पुस्तकालयों को समृद्ध बनाने के लिए डिजिटल पुस्तकालय, बाल पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालय एवं चल पुस्तकालय शुरू किए जाने चाहिए।
- पुस्तकालयों में हिंदी, अंग्रेजी, क्षेत्रीय भाषाओं एवं अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में साहित्य उपलब्ध होना चाहिए।
- विभिन्न स्थानों से संबंधित कहानियों,लोकगीतों एवं शास्त्री गीतों पर आधारित पुस्तकें होना चाहिए।
- देश में हो रहे समस्त शोध साहित्य पुस्तकालय में उपलब्ध होने चाहिए। वैज्ञानिक सोच, नैतिक मूल्य एवं रोजगार परक साहित्य पुस्तकालयों में उपलब्ध होना चाहिए।

गीता शर्मा,

पुस्तकालय अध्यक्ष

कौशल आधारित शिक्षा

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार)

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) का मुख्य उद्देश्य भारत को वैश्विक स्तर पर शैक्षिक रूप से महाशक्ति बनाना। इस नीति की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इसमें सारे देश के लिए एक समान शैक्षिक ढाँचे को स्वीकार किया और अधिकांश राज्यों ने 5+3+3+4 की संरचना को अपनाया। इसका मतलब है कि अब स्कूल के पहले पांच साल में प्री प्राइमरी स्कूल के तीन साल और कक्षा । और कक्षा 2 सहित फाउंडेशन स्टेज शमिल होंगे । फिर अगले तीन साल कक्षा 3 से 5 की तैयारी के चरण मे विभाजित किया जाएगा इसके बाद उस साल मध्य चरण कला (6 से 8) और माध्यमिक अवस्था के चार वर्ष (कक्षा 9 से 12) । छात्र अब जो भी पाठयक्रम चाहे वो ले सकते हैं।

इसमे कुछ मुख्य पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र का परिवर्तन शामिल हैं, जैसे भाषा दक्षता; मानव अपने विचारों का आदान प्रदान सुनकर, बोलकर, पढ़कर और लिखकर करता है भाषा से सामाजिक व्यक्तित्व का विकास होता है हमारे हिंदी अध्यापक इस बात का पूर्ण रूप रूप से ध्यान रखते हैं, कि छात्र सही रूप से भाषा का आदान प्रदान करे । पूछताछ आधारित शिक्षा मे छात्र शोधकर्ता की भूमिका निभाते हैं उन्हें नए प्रश्न पूछने और नए विचारों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है इससे हमे अपने निष्कर्षो को अपने सहपठियो के साथ साझा करने और एक दूसरे से सीखने का अवसर मिलता है ।

जांच परियोजना विशुद्ध रूप से प्रायोगिक प्रक्रियाओं से जुड़े अनिवार्य असाइनमेंट का हिस्सा हैं ताकि आप किसी ऐसी चीज की रिपोर्ट करें और उसका सत्यापन करें जो किसी और ने पहले ही खोजा हो। हमने अंग्रेजी में परियोजना कार्य किया उससे हमे बहुत कुछ सीखने को मिला क्षेत्र का काम, प्रतिवेदन और भी बहुत कुछ। विद्यार्थियों को कक्षा मे कुछ क्रिया करने दिखाने की पद्धति प्रदर्शन विधि कहलाती हैं इस विधि के अंतर्गत हमारे शिक्षक बीच-बीच में हमसे प्रश्न पूछते है और हम सभी सभी छात्र-छात्राएँ सक्रिय होकर भाग लेते हैं। करके सीखना: जो कार्य करके सीखा जाता है उसका अधिगम स्थायी रूप से बना रहता है। हम किसी भी प्रश्न (गणित, लेखाकर्म) को यदि देखेंगे तो हमे इतना समझ नही आएगा जितना उसे करके देखने पर, अनुभवजन्य अधिगम भी व्यक्ति को करके सीखने पर जोर देता है।

कोई भी प्रयोग जब तक हम स्वयं से न करें तो हमें समझ नही आता है ये सभी नई पद्धतियां हमारी शिक्षा की नींव को और मजबूत बनाता हैं। शिक्षा नीति 2020 से बच्चों में बहुआयामी प्रतिभा जागृत करेगी और उनको आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से रोजगारपरक शिक्षा उपलब्ध कराएगी जो कि बेहद आवश्यक मुद्दा है।

नाम :- कृतिका सिंह पेटल

कक्षा :- II (स.)

विज्ञान शिक्षण में हिंदी का महत्व

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्राप्त करने पर विशेष जोर दिया गया है| यह वैज्ञानिक रिसर्च से भी प्रमाणित हो चुका है कि हम अपनी मातृभाषा में दिए गए ज्ञान को आसानी से समझ पाते हैं तथा ज्यादा समय तक याद भी रख पाते हैं ,इसलिए विज्ञान शिक्षण में भी हिंदी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है| मध्यप्रदेश राजभाषा क्षेत्र क में आता है इसलिए यहां पर विद्यार्थी विज्ञान की जटिल अवधारणा को भी हिंदी में आसानी से समझ सकते हैं और फिर समझने के बाद इंग्लिश में लिखना भी आसान हो जाता है| विज्ञान में हम जटिल चीजों का अध्ययन करते हैं और विज्ञान का एक विशाल पाठ्यक्रम होता है, जिसके लिए चीजों की गहरी और व्यापक समझ जरूरी है |पर कभी-कभी इतनी सारी चीजों को याद रखना वास्तव में कठिन हो जाता है, हम सभी इस मुश्किल का सामना करते हैं तो आइए विज्ञान को आसान बनाने के लिए आज हम बनाते हैं हिंदी में कुछ Mnemonics (स्मृति चिन्ह या स्मृति सहायक)

MEIOSIS PROPHASE STAGES

लता जरा पानी दे दो

L- LEPTOTENE

Z- ZYGOTENE

P- PACHYTENE

D- DIPLOTENE

D- DIAKINESIS

-श्रीमती रेणु त्रिपाठी

स्नातकोत्तर शिक्षक जीवविज्ञान

HUMAN GENETIC DISORDERS
अलका सिक थी फेनिल से
ALKA- ALKEPTONURIA
SICK- SICKLE CELL ANAEMIA
TH- THALASSEMIA
PHENYL- PHENYLKETONURIA
C- CYSTIC FIBROSIS

"एक भारत श्रेष्ठ भारत"

एक भारत श्रेष्ठ भारत,विश्व में उल्लेख भारत |
सत्य और अहिंसा का,विश्व गुरु है योग का |
गाँधी-बल्लभ-सुभाष का, क्रान्ततकारी इतिहास का |
अनेकता में एकता का,विश्व में बंधुत्व का |
एक भारत श्रेष्ठ भारत,विश्व में उल्लेख भारत |

ज्ञान और विज्ञान का,अखण्डता की शान का |
वेद और पुराण का, उपतनषदों के ज्ञान का |
साह त्य-कला-सिंगीत का, संस्कृति की समृद्धि का |
वसुधेव कुटुंब का , शांति दूत संदेश का |

एक भारत श्रेष्ठ भारत, विश्व में उल्लेख भारत |

एस राम।
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक संस्कृत

हिंदी प्यारी, मातृभाषा हमारी

हिंदी प्यारी, मातृभाषा हमारी
दिखाती है यह संस्कृति हमारी
हिंदी प्यारी, संस्कृति हमारी।
विद्वानों की रचनाएं है यह भाषा हमारी,
गर्व से कहते है हिंदी हमारी, भाषा हमारी।
सांस्कृति हमारी यह भाषा है,
परन्तु हमने इसे धिक्कारा है,
अंग्रेजी को कल्चर बनाया है,
संस्कृति को हमने धिक्कारा है।
क, ख, ग जिन्हें नहीं है आती,
जिन्हें नहीं आती हिंदी गिनती,
हम समझते उन्हें बड़े 'हाई - फाई',
यह निराशा मन में है आती।
जिन्हें न पता नवासी, सैतालिस का मतलब,
कहते है वह "हैप्पी हिंदी डे!"
क्या समझेगा वह भावनाएँ
असली विद्वान कहेगा...
"हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!"
क्योंकि हिंदी हमारी शान है,
वह हर भारतीय की पहचान है।

- वैष्णवी टेंटवाल
कक्षा 9वीं अ

हिंदी देश की भाषा है, हर भारतवासी की अभिलाषा है।

शिक्षा पर कविता

जीवन का आधार है शिक्षा
खुशहाली का भंडार है शिक्षा ।
जीवन मे नई ज्योति जगाती
सपने सारे पूरे कर दिखाती ।।
शिक्षा जरूरी है संस्कारों की ,
संस्कृति की रक्षा के लिए ।
नई शिक्षा नीति आई,
सबके जीवन मे खुशियाँ लाई ।
मातृ भाषा का हो विस्तार,
है इस नीति का आधार ।।
ऊंच नीच जाती भेद भाव नही देखती है शिक्षा ।
सभी के लिए बराबर होती है शिक्षा
न ज्यादा न कम होती है शिक्षा ।
सबको एक समान मिलती है शिक्षा ।

- शर्मिष्ठा 3 A प्रथम पाली

नौनिहाल अभिव्यक्ति

SHRUTI VERMA
DOB.23.01.2010
National Education Policy
राष्ट्रीय शिक्षा नीति
नीतू, क्या तुमने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में सुना ?
हाँ न्यूज़ में थोड़ा सुना था। क्या आप मुझे इस नई शिक्षा नीति के बारे में थोड़ी और जानकारी दे सकती है?
हाँ क्यों नहीं -
नई शिक्षा नीति
• भारत में 34 साल बाद नई शिक्षा नीति आई है।
• इससे पहले 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई थी।
• नई शिक्षा नीति को भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया।
• जिसे न्यू एजुकेशन पॉलिसी, 2020 नाम दिया
• इस नीति के जरिए 2030 तक 100% युवा और साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करना है।
• नई शिक्षा नीति में सबसे खास बदलाव 5+3+3+4 का प्रारूप है।
अच्छा! ये 5+3+3+4 क्या है?
5+3+3+4 के प्रारूप में पहला पांच साल बच्चा प्री स्कूल और कक्षा 1 और 2 में पढ़ेगा। इन्हें मिलाकर पांच साल पूरे हो जाएंगे। इसके बाद 8 साल से 11 साल की उम्र में आगे तीन कक्षाओं, कक्षा - 3, 4 और 5 की पढ़ाई होगी। इसके बाद 11 से 14 साल की उम्र में कक्षा 6, 7 और 8 की पढ़ाई होगी। इसके बाद 14 से 18 साल की उम्र में छात्र 9वीं से 12वीं तक की पढ़ाई कर सकेंगे।
" शिक्षा से मेरा तात्पर्य शरीर मन और आत्मा में बच्चे और मनुष्य में सर्वश्रेष्ठ का एक सर्वांगीण चित्रण है।"
- महात्मा गाँधी
- श्रुति वर्मा, कक्षा - 8 वी "अ"

नई शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति है आई ।

हर बच्चा और युवा हो साक्षर

यह अधिकार देने है आई।

सर्वांगीण विकास पर जोर

विविध भाषा का है शोर।

कला कौशल में हो दक्षता

रचनात्मकता में हो क्षमता ।

रटंत विद्या हो प्रेरणा हीन

हो सब प्रोद्योगिकी और शोध में लीन।

क्रियाकलापों से होता विकास

तार्किक विद्या हो सब की आस।

योग्य नागरिक बने हर बच्चा

देश के विकास में हो सच्चा।

ज्ञान , कला , विज्ञान या खेल में

देश को गौरवान्वित करे हर बच्चा

श्रीमती स्नेहल मुले

प्राथमिक शिक्षिका

-

जिंदगी का सफ़र.....

जिंदगी एक खट्टा मीठा है सफर,
जिसमें दिखता है अलग-अलग रंगों का असर!
कभी हाथ पकड़े आशा तो कभी निराशा,
और कभी मिलता है खुशियों का बताशा !
लेकिन समय है बड़ा बलवान,
सदा न रहता यह एक समान !
मन में रखना यह दृढ़ विश्वास ,
तुम हो पहले सबसे खास
ना जाने कितनी असफलताओं के बाद
सफलता मिलेगी,
लेकिन याद रखना हर संभव प्रयास के बाद
तुम्हें ही मिलेगी!

भावना (प्राथमिक शिक्षिका)

सांस्कृतिक विरासत के विकास मे मातृ-भाषा का योगदान

भारत समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला एक देश है। अनादिकाल से हमारी संस्कृति और विरासत विविधता में एकता के संदेश को प्रचारित करने वाले विषम समूहों के बीच पूर्ण सद्भाव सुनिश्चित करने वाली अपनी विशिष्टता के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध रही है।

सामाजिक विज्ञान विषय का अध्ययन अकादमिक अनुशासन का वह हिस्सा है जिसका उद्देश्य यह ज्ञान प्रदान करना है कि समाज कैसे बने और समाज के भीतर व्यक्तियों के पारस्परिक संबंध कैसे बने। इस प्रकार विभिन्न संस्कृति, परंपराओं और विरासत के गहन ज्ञान और समझ के लिए, भाषा एक प्रमुख भूमिका निभाती है क्योंकि यह बातचीत के माध्यम के रूप में कार्य करती है।

भारतीय संविधान में शामिल 22 अनुसूचित भाषाओं में से, हिंदी वह भाषा है जो पूरे देश में व्यापक रूप से बोली जाती है। इसलिए हिंदी भाषा हमारे देश की समृद्ध परंपराओं की पहचान कराने में मदद करती है। विद्यार्थी दक्षिणी राज्यों और उत्तर पूर्व भारत की संस्कृति को समझने में सक्षम हैं, क्योंकि इन स्थानों की लिपियाँ हिंदी भाषा में व्यापक रूप से उपलब्ध हैं।

इसके अलावा, चूंकि छात्रों की मातृभाषा हिंदी है, इसलिए एनईपी 2020 में परिकल्पित भारतीयता के दृष्टिकोण को विकसित करना सुविधाजनक हो जाता है, जब इसे मातृभाषा में पढ़ाया जाता है।

सुश्री सनु रजप्पन
(पी. जी. टी. अर्थशास्त्र)

नौनिहाल अभिव्यक्ति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- खेल एवं शारीरिक शिक्षा

खेलकूद के माध्यम से सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देती नई शिक्षा नीति 2020 में ऐसे कई बुनियादी और निर्णायक बिंदु शामिल हैं. जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में मददगार सिद्ध होते हैं. नई शिक्षा नीति खेलों को अन्य विषयों के समान महत्व देती है. खेलकूद ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा बच्चों का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास होता है. खेलकूद से जुड़ी क्रियाशीलता का अकादमिक परिणामों, कक्षा में व्यवहार और उपस्थिति के स्तर पर भी सकारात्मक योगदान रहता है.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मैं खेलकूद एवं शारीरिक शिक्षा को बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक बताया है तथा शिक्षण प्रक्रिया में खेलकूद को शिक्षा शास्त्र के रूप में प्रयोग करने की सलाह दी गई है. इसी को देखते हुए दिल्ली बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन ने शारीरिक शिक्षा का एक सुनियोजित पाठ्यक्रम तैयार किया है जोकि कक्षा 1 से 12 तक चलाया जाएगा जिसके अंतर्गत विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को शारीरिक गतिविधियों में भाग लेना अनिवार्य होगा. इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय के प्रत्येक बच्चे का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाएगा तथा शारीरिक शिक्षकों का एक विशेष समूह बच्चों के स्वास्थ संबंधी शारीरिक शारीरिक दक्षता का आकलन कर आवश्यकता अनुसार शारीरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में बदलाव कर सकता है. जिससे यह प्रक्रिया सार्थक बनाई जा सके. खेलकूद के मुख्य विषय के रूप में शामिल होने से हम सीखने के परिणामों वाले लक्ष्य प्राप्त करते हुए पहले से ज्यादा चुलबुले मौज मस्ती से भरे और दिलचस्प स्कूल माहौल की शक्ल में इस नीति के साकार होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं

श्री हरीश बहादुर (खेल शिक्षक)

त्रि-भाषा सूत्र का विद्यालय में महत्त्व

हम जानते हैं कि भाषा अन्य व्यक्तियों से संपर्क स्थापित करने का महत्वपूर्ण साधन है। हमारे देश में बहुभाषा-भाषी लोग रहते हैं। भाषा के संदर्भ में यह तथ्य प्रचलित है कि- 'घाट घाट पर बदले पानी, कोस कोस पर वाणी।' भाषाओं की इसी विविधता के कारण भारतीय संविधान में भी 22 भाषाओं को स्थान मिला है।

त्रि-भाषा का शाब्दिक अर्थ है तीन भाषाएँ । राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के तहत गैर-हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी भाषा का क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेजी भाषा के साथ अध्ययन किया जाना शामिल किया गया है। भाषा सीखना बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए महत्त्वपूर्ण हिस्सा तो है ही, साथ ही इसका प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय एकता व सद्भाव को बढ़ावा देना है। यह भी सत्य है कि विभिन्न राज्यों में सम्पर्क भाषा और मातृभाषा अलग-अलग हो सकती है, इस स्थिति में सम्पर्क भाषा का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। गैर-हिंदी भाषी राज्यों में यह हिंदी या अंग्रेज़ी होगी। हिंदी भाषी राज्यों में यह अंग्रेज़ी या अन्य आधुनिक भारतीय भाषा होगी। त्रि-भाषा सूत्र का मुख्य उद्देश्य हिंदी व गैर-हिंदी भाषी राज्यों में भाषाई अंतर को समाप्त कर विद्यार्थियों को सीखने के अवसर उपलब्ध कराना तथा उनके मन में राष्ट्रीय एकता व सद्भावना को अक्षुण्ण बनाए रखना है।

इस प्रकार त्रि-भाषा सूत्र राज्यों के बीच भाषाई अंतर को समाप्त कर राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने का विचार रखता है, साथ ही शिक्षा के मानक स्तरों को बढ़ाने में सहायक होगा ।

डॉ. मधुलता भलावी
प्राथमिक शिक्षिका
के.वी.3 भोपाल, प्रथम पाली

कविता- हिंदी प्यारी भाषा !

गणित को हिंदी सरल बनाए, भावों को आसानी से समझाए।

हिंदी सुंदर भाषा भाए!

गणित समस्या जब समझ न आए, हिंदी उसका हाथ बटाए।

हिंदी सुंदर भाषा भाए!

अल्फा, बीटा, गामा सुन बच्चों का सर चकराए।

जैसे ही हिंदी में समझाएं, बच्चों का मनोबल बढ़ जाए।

हिंदी सुंदर भाषा भाए!

जोड़, घटाना, गुणा, भाग सभी मचाते बहुत उत्पात।

जैसे ही मिलता हिंदी का साथ, सबका हो जाता पत्ता साफ़।

अतः इस कविता के माध्यम से बस इतना ही कहना चाहती हूं कि हिंदी एक सरल,सहज व मृदु भाषा है, जिससे गणित जैसे गूढ़ विषय भी बहुत सरल व मज़ेदार हो जाता है।जय भारत, जय हिंदी!

दीपिका सिंह
टीजीटी गणित

परीक्षा

है प्रश्न अगर, उत्तर भी होगा,
बिन उत्तर कोई प्रश्न नहीं।
कहीं, कभी हल सरल लगेगा,
कहीं, कोई हल सरल नहीं।
जीवन की हर राह परीक्षा ,
इसका कोई अंत नहीं ।
प्रश्नों से न घबराए तो,
रहे सफलता पास खड़ी ।
एक दिन की न ये तैयारी,
तैयारी की घड़ी बड़ी ।
विश्वास तुझे करना होगा,
पथ पर आगे बढ़ना होगा ।
प्रश्नों को तू जांच परख,
हर दिन अपनी तैयारी रख।
तुझमें गर हिम्मत होगी,
जीत तेरी निश्चित होगी

कमलेश कुमार जैन
प्राथमिक शिक्षक

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य में कोई अलगाव नहीं “

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का एक महत्वपूर्ण निर्णय अध्ययन की विभिन्न धाराओं यथा कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के 'कठोर' अलगाव को समाप्त करना है। अब विद्यार्थी यदि चाहे तो इतिहास के साथ ही भौतिकी एवं जीव विज्ञान पढ़ सकेगा एवं यदि वह चाहे तो भूगोल, गणित एवं सांख्यिकी तीनों विषय की पढ़ाई एक साथ कर सकता है जो कि अब तक संकायों की अवधारणा के कारण संभव नहीं था |

अभी तक अमूमन कक्षा दसवीं में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी विज्ञान संकाय, उनसे कम वाले वाणिज्य और बचे हुए विद्यार्थी कला संकाय में प्रवेश लेते थे, आमजन भी यही मानता था विज्ञानं के विद्यार्थी पढ़ाई में ज्यादा तेज होते हैं एवं कला संकाय के तुलनात्मक रूप से कम, जो कि ना तो तर्कसंगत है ना ही सही | लेकिन इस अवधारणा के चलते बच्चों पर विज्ञान संकाय से पढ़ाई करने का एक पारिवारिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दबाव होता था जिसके कारण विद्यार्थी अपनी रूचि के विषयों का अध्ययन करने से वंचित रह जाते थे |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 ने संकायों की इस अवधारणा को ही समाप्त कर दिया है | अब विद्यार्थी अनिवार्य विषयों को छोड़कर बाकि एच्छिक विषयों में अपनी रूचि के अनुरूप किन्हीं भी तीन विषयों का अध्ययन कर सकता है | अब विद्यार्थी ऐसे तीन विषयों का अध्ययन कर सकेंगे जो कि अलग अलग संकाय में होने के कारण अब तक संभव नहीं था |

संकायों की अवधारण को समाप्त करने के निम्नलिखित लाभ होंगे -

- विद्यार्थी को अपनी रूचि के अनुरूप विषय चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी |
- समस्त विषयों को सामान रूप से सम्मान दिया जायेगा |
- विद्यार्थी पर माता पिता एवं माता पिता पर समाज का एक विशेष संकाय में प्रवेश लेने का दबाव समाप्त हो जायेगा |
- विषयों की विविधता के चलते विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में वृद्धि होगी |

हरि ओम सुथार
स्नात्कोत्तर शिक्षक
रसायन शास्त्र

आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता (F.L.N)

आधारभूत शिक्षण बच्चे के भावी शिक्षण का आधार है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सभी बच्चों के लिये आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (Foundational Literacy and Numeracy- FLN) की प्राप्ति को प्राथमिकता देती है। पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल ने 5 जुलाई 2021 को बेहतर समझ और संख्यात्मक ज्ञान के साथ पढ़ाई में प्रवीणता के लिए पहल- निपुण भारत मिशन की शुरुआत की। इस मिशन का उद्देश्य 3 से 9 वर्ष की आयु तक के बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करना है।

इस मिशन के तहत यह सुनिश्चित करना होगा की 2026-27 तक कक्षा 3 के बच्चे आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक कौशल को अनिवार्य रूप से प्राप्त कर लें। आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता NEP- 2020 के प्रमुख विषयों में से एक है। आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता पढ़ने लिखने और गणित में बुनियादी कौशल को संदर्भित करता है। FLN को मोटे तौर पर एक बच्चे की बुनियादी पाठ पढ़ने और आधारभूत गणित के सवालों (जैसे- जोड़ और घटाव) को हल करने की उसकी क्षमता के रूप में संकल्पित किया गया है।

नई शिक्षा नीति के अनुसार प्राथमिक शिक्षा के आधारभूत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 योजनाबद्ध तरीके से प्रयास कर रहा है। हमारे विद्यालय में आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक कौशल को पूर्ण करने के लिए बच्चों को खेल,कार्टून, कहानी इत्यादि जैसे मनोरंजक तरीकों से पढ़ाया जाता है। इसमें बच्चे खेलते खेलते हैं नई-नई चीजों को सीख लेते हैं।

विद्यार्थियों में भाषाई विकास के लिए अध्यापकों द्वारा विभिन्न गतिविधियां करवाई जाती हैं जैसे मौखिक भाषा क्षमता (हिन्दी / अंग्रेजी)

 चित्र एवं परिवेश पर आधारित विचारों को अभिव्यक्त करना। अक्षरों/ शब्दों की मौखिक ड्रिलिंग (उदाहरण के लिए:

तुकबंदी वाले शब्द, ध्वनात्मक वीडियो)

मुखौटे के साथ रोल प्ले

पपेट्स का प्रयोग करते हुए कहानी सुनाना।

लेखन भाषा क्षमता (हिंदी /अंग्रेजी)

सूजी/मिट्टी में अक्षरों को लिखना

कविता कहानी में आए कठिन शब्दों की मात्राओं को पहचानना और उनसे नए शब्द बनाना।

पहेलियों का प्रयोग

पठन क्षमता (हिंदी /अंग्रेजी)

सुनने और बोलने पर ध्यान देना

वीडियो के माध्यम से कविता लयात्मक अनुकरण।

ध्वनियों को पहचानना

कहानियां पढ़ना

"केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 3 द्वारा की गई नई पहल पोडकास्ट प्रसारण (रेडियो राग) भी बच्चों की अभिव्यक्ति और उच्चारण के कौशल को विकसित करने का सशक्त माध्यम है।"

आधारभूत भाषाई विकास के साथ-साथ विद्यालय में गणितीय कौशल के लिए भी अध्यापकों द्वारा खेल खेल में गतिविधियां करवाई जाती हैं।

संख्यात्मक कौशल के लिए विद्यालय द्वारा करवाई गई गतिविधियां इस प्रकार हैं-

- गणितीय खेलों द्वारा गणित को सीखना
- संख्या समझ विकसित करने के लिए खेल का उपयोग करना
- बिंगो : यह गतिविधि बच्चों को इकाई और दहाई के साथ स्थानीय मान समझने में मदद करती है।
- चित्रों से गणित को सीखना
- स्वदेशी खिलौनों द्वारा सीखना
- क्ले 2D और 3d शेप बनाना
- वातावरण से सीखना जैसे पार्क में घूमते हुए पक्षियों पेड़ों की गणना करना।
- वस्तुओं से सीखना जैसे विभिन्न आकार के गिलास आदि से मापन सीखना।
- विभिन्न पैटर्न और ब्लॉग्स के द्वारा सीखना।

"निपुण भारत का है सपना
हर बच्चा समझे
भाषा और गणना "

तमन्ना राठी
(प्राथमिक शिक्षिका)

नई शिक्षा नीति : विज्ञान शिक्षण

नई शिक्षा नीति 2020 में 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के अंतर्गत रखा गया है एवं 2030 तक नई शिक्षा प्रणाली को निश्चित किया गया है। जिसमें प्रत्येक स्टेज पर बालक के नैतिक एवं मानसिक विकास के स्तर को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है। आज के इस दौर में जब यह धारणा प्रबल होती जा रही है कि विज्ञान विषय का विद्यार्थी हमेशा अतिरिक्त बोझ से दबा हुआ होता है एवं वह लगभग संवेदना शून्य होता है, तब विज्ञान के शिक्षक के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि छात्रों में विज्ञान शिक्षा के अतिरिक्त मानवीय मूल्यों संस्कृति एवं भावनाओं को जीवित रखने का संपूर्ण प्रयास किया जाए ।

राष्टीय शिक्षा नीति 2020 में विज्ञान शिक्षण के क्षेत्र में अहम निर्णय लिए गए हैं, जिसमें यह बताया गया है कि विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य केवल मशीनी रोबोट या कंप्यूटर ज्ञानी नागरिक उत्पन्न करना नहीं है बल्कि एक ऐसे नागरिक का बनाना है जो वैश्वीकरण और वसुदेव कुटुंबकम के इस दौर में समाज के साथ जुड़कर मूलभूत मानवीय मूल्यों को जीवित रख सके । इस उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु जिन प्रयासों की आवश्यकता होगी उनका भी उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्पष्ट रूप से किया गया है ।

NEP 2020 में विज्ञान को विषय के रूप में ना पढ़ा कर एक तार्किक क्षमता और योग्यता के विकास के संदर्भ में लिया गया है। इसका उद्देश्य ना केवल छात्रों में विज्ञान में रुचि जागृत करना होगा, बल्कि आम जनता के बीच में इसके संबंध में जागरूकता की आवश्यकता को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। इसके लिए आवश्यक है कि विज्ञान को दिन-प्रतिदिन के क्रियाकलापों से जोड़ा जाए। साथ ही शिक्षण के माध्यम को अन्य भाषाओं के साथ जोड़ना एवं छात्रों को उनकी भाषा में समझाया जाना प्रमुख बिंदु के रुप में सम्मिलित किया गया है। वैश्विक स्तर पर जहां विज्ञान शिक्षण में क्रियाकलाप आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया है वहीं नई शिक्षा नीति में विज्ञान शिक्षण के प्रयोगात्मक एवं उपयोगिता आधारित शिक्षण अधिगम को केंद्र बिंदु माना गया है

NEP में सबसे अच्छा बिंदु यह है कि उच्चतर कक्षाओं में विज्ञान को मुख्य विषय में चुनने वाले छात्र विज्ञान के साथ अपनी रूचि के अन्य कोई विषय भी ले सकेंगे जैसे संगीत कला शारीरिक शिक्षा वोकेशनल स्किल डेवलपमेंट कोर्स Iशिक्षण अधिगम के दौरान छात्रों की रचनात्मक संवेदनशीलता एवं भावनात्मक एवं तार्किक क्षमताओं के विकास को पूर्ण रूप से ध्यान में रखने के स्पष्ट संकेत दिए गए हैं जैसे ही बालक प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर पर प्रवेश करेगा उसके विज्ञान शिक्षण पाठ्यक्रम को उसकी दिनचर्या से जोड़ा जाएगा एवं उसमें सेवा सहिष्णुता लैंगिक संवेदनशीलता एवं पर्यावरण के प्रति सम्मान की भावना जागृत हो सके ऐसा प्रयास किया जा सकेगा। विज्ञान के छात्रों का विकास इस प्रकार होना चाहिए कि छात्र वर्तमान में समाज में प्रचलित मिथक पूर्वाग्रहों एवं मान्यताओं पर न केवल अपना पक्ष रख सकें बल्कि अपने तर्कों से दूसरों को सही राह दिखा सकें I

हमारे विद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उपर्युक्त सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर शिक्षण में नए प्रयोगों को प्राथमिकता दी जा रही है जो की हमारे विद्यार्थियों के कौशल विकास में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

ज्योति सोनी
टीजीटी विज्ञान